'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Special Issue – 268 : माध्यम लेखन में रोजगार के अवसर
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
July- 2021

फीचर : परिभाषा एवं अवधारणा

प्रा. हर्षल गोरख बच्छाव
हिन्दी विभाग
समाजश्री प्रशांतदादा हिरे
महाविद्यालय नामपुर तह.
बागलान जि. नाशिक
ईमेल-harshalbachhav5882@gmail.com

प्रो. डॉ. अनिता नेरे
विभागाध्यक्ष एवं शोध निर्देशक,
श्रीमति पुष्पाताई हिरे महिला
महाविद्यालय, मालेगांव कैंप (नाशिक)
ईमेल-anitanere321@gmail.com

फीचर समाचार पत्रों मे प्रकाशित होने वाली किसी विशेष घटना, व्यक्ति, जीव-जन्तु, तीज-त्योहार, दिन स्थान, प्रकृति-परिवेश से संबंधित व्यक्तिगत अनुभूतियों पर आधारित वह विशिष्ट आलेख होता है जो कल्पनाशीलता और सृजनात्मक कौशल के साथ मनोरंजक और आकर्षक शैली मे प्रस्तुत किया जाता है।

आज फीचर लेखन तथा उसके प्रस्तुतिकरण का आधुनिक पत्रकारिता में अत्यधिक महत्व हो गया है। समाचार अगर पत्रकारिता की रीढ़ है तो फीचर पत्रकारीता का मौन्दर्य बढ़ाने वाली शक्ति। पत्रकारिता में समाचार जहा तात्कालिक घटनाओं का तथ्यपूर्ण अभिलेख होता है तो रूपक यानी फीचर समाचार के तत्काल स्वरूप मे अलग उसका विस्तार , उसका सचित्र प्रस्तुतीकरण या उससे जुड़े सम्पूर्ण घटनाक्रम का विवरण प्रस्तुत करता है। आधुनिक पत्रकारिता में अब स्थानभाव के कारण समाचार लेखन में शब्दों की सीमा तय कर दी गई है और पत्रकार को उसी शब्द सीमा में सब कुछ कहना होता है। ऐसे में फीचर, पत्रकार के लिए एक मददगार के तौर पर काम करता है। फीचर में ग्राफिक्स, चित्रों, रेखाचित्रों और संक्षिप्त प्रस्तुतिकरण के माध्यम से बहुत छोटे स्थान में बहुत कुछ कहा, लिखा या प्रस्तुत किया जा सकता है। रूपक का विकास विवरणात्मक रचनाओं से हुआ है। लेकिन शब्दों और स्थान की सीमा के चलते अब फीचर संक्षिप्त होने लगे हैं। हालाँकि संक्षिप्त होने के बावजूद फीचर का महत्व कम नहीं हुआ है बल्कि और अधिक बढ़ गया है।

फीचर मे समाचार के विस्तार को ही एक विशेष तकनीक के साथ प्रस्तुत किया जाता है ।इसके लिए फीचर लेखक को यह पता करना होता है कि ,समाचार का मुख्य विषय या मुख्य पात्र कौन है ?समाचार के मुख्य विषय के साथ जुड़े प्रमुख तत्व क्या है ? लेखक को इस सबको प्रस्तुत करते समय उसमे व्यक्तिगत स्पर्श भी देना होता है। मानवीय भावनाओं के स्पर्श के साथ -साथ मनोरंजक ढंग मे प्रस्तुत फीचर अधिक लोकप्रिय होते है क्योंकि उनमे विषय के सम्पूर्ण तथ्यों कि जानकारी के साथ-साथ पाठक ,श्रोता या दर्शक का मनोरंजन भी होता है।

समाचार तथ्यों का विवरण तथा विचार देकर खत्म हो जाता है जबकि फीचर मे घटना अथवा विषय के परिवेश ,विविध पक्षो तथा उसके प्रभावों का वर्णन होता है ।समाचार मे लिखने वाले के विचार अथवा उसके व्यक्तित्व की झलक नहीं होती जबकि फीचर मे लेखक की विचारधारा ,उसकी कल्पनाशीलता के साथ -साथ उसके व्यक्तित्व की भी झलक मिलती है ।फीचर मे कथा तत्व की प्रधानता रहती है अर्थात उसके लेखन या प्रस्तुति मे सरलता और प्रवाह दोनों ही होते है ।लेकिन फीचर महज कथा नहीं होता। फीचर कल्पनाजगत की बातों मे खो जाने की जगह विषय की गहराई मे जाकर पाठकों की जिज्ञासा को शांत करने का काम करता है।

Scanned with CamScanner

फीचर लेखन एक कलात्मक काम है और किसी भी पत्रकार को अच्छा फीचर लेखक बनाने के किए –

१)विषय का गंभीरता से अध्ययन करना चाहिए ।

२)इस बात का प्रयास करना चाहिए कि फीचर सामयिक हो ।

३) उसमे सूक्ति ,मुहावरों ,उदाहरणो का इस्तेमाल किया जाना चाहिए ।

४) उसमे रोचकता होनी चाहिए ।मनोरंजक होने के साथ ही उसे शिक्षाप्रद भी होना चाहिए ।

५) उसकी विश्वसनीयता निरंतर रखने के लिए छायाचित्रों ,रेखाचित्रों आदि का भी उसमे पर्याप्त उपयोग होना चाहिए ।

अर्थ, महत्व एवं लेखन :-

फीचर समाचारों के प्रस्तुतिकरण कि एक ही विधा है लेकिन समाचार कि तुलना मे फीचर मे गहन अध्ययन, चित्रो, शोध और साक्षात्कार आदि के माध्यम से विषय कि व्याख्या होती है ।उसका विस्तृत प्रस्तुतिकरण होता है और यह सब कुछ इतने सहज और रोचक ढंग से होता है कि ,पाठक उसके बहाव मे बंधता चला जाता है।पत्रकारिता और साहित्य के विद्वानोने रूपक की अलग-अलग परिभाषाएँ गढ़ी है ।एक परिभाषा के अनुसार, "रोचक विषय का मनोरम और विशद प्रस्तुतिकरण ही फीचर है । इसमे दैनिक समाचार ,सामयिक विषय और बहुसंख्यक पाठकों की रुचि वाले विषय की चर्चा होती है । इसका लक्ष्य मनोरंजन करना ,सूचना देना और जानकारी को जन उपयोगी ढंग से प्रस्तुत करना है ।"

एक अन्य परिभाषा के अनुसार,

"फीचर समाचार मूलक यथार्थ ,भावना -प्रधान और सहज कल्पना वाली रसमय एवं संतुलित गद्यात्मक एवं दृशयात्मक, शाश्वत ,निसर्ग और मार्मिक अभिव्यक्ति है ।"

एक अन्य परिभाषा मे तो फीचर में तो फीचर को 'समाचार पत्र की आत्मा' कह दिया गया है। The good newspaper is not just only paper and ink. The good newspaper lives. News is its life blood, leaders are its heart and features may be said to be its soul सामान्य शब्दों में कहें तो समाचार का काम तथ्य और विचार देकर खत्म हो जाता है। जबकी फीचर का काम इससे आगे का होता है। यह समाचार की पृष्ठभूमि का खुलासा करते हैं, विषय या घटना के जन्म और विकास का विवरण देते हैं। यह विषय अथवा घटना का पूरा खुलासा करते हैं और पाठक को कुछ सोचने के लिए भी विवश करते हैं। एक अच्छे फीचर की सार्थकता इसी बात में है कि वह अपने पाठकों के मन मस्तिष्क पर कितना प्रभाव डालती है। फीचर लेखक घटना या विषय के बारे में अपनी प्रतिक्रिया या विचार भी पाठक को बतलाता है और इस तरह पाठक की कल्पना शक्ति को और उसकी वैचारिक मनस्थिति को भी प्रभावित करता है।

फीचर का महत्व इसी बात में है कि यह कब, क्यों, कैसे, कहां और कौन को स्पष्ट करने वाले समाचार अर्थात न्यूज से आगे जाकर तथ्य,कल्पना और विचार की संतुलित प्रस्तुति के माध्यम से अपना एक विशेष प्रभाव छोड़ता है। फीचर का एक महत्व यह भी है कि यह पाठक के मन में किसी खबर को पढ़ने के बाद पैदा हुई जिज्ञासा को भी संतुष्ट करता है। आजकल समाचार पत्रों में फीचरों का उपयोग दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। यूरोप में जारी जबर्दस्ती सरदी और हिमपात पर भारतीय भाषाई अखबारों में विस्तृत समाचारों के लिए स्थानाभाव हो सकता है। लेकिन इसी विषय को सहज एक छोटी सी जगह में एक सचित्र फीचर के जरिए प्रस्तुत कर अखबार अपने स्थानाभाव की समस्या से भी उबर सकते हैं और पाठक को बर्फ से जमे यूरोप के बारे में सम्पूर्ण जानकारी भी मिल जाती है। इसी तरह स्थानीय दुर्घटना के समाचार के साथ-साथ अगर उस तरह की अन्य घटनाओं का विवरण, रोकथाम के उपायों, प्रभावितों के अनुभव आदि एक सचित्र फीचर के रूप में प्रस्तुत कर दिया जाता है तो इससे पाठक को सम्पूणय जानकारी एक साथ मिल जाती है। फीचर के इस उपयोग ने आज फीचर के महत्व को अत्यधिक बढ़ा दिया है।

Scanned with CamScanner

इस बढ़ते महत्व के कारण फीचर लेखन भी अब पत्रकारिता की एक महत्वपूर्ण विधा हो गई है। इसी के साथ फीचर लेखकों का महत्व बढ़ता जा रहा है। आज समाचार पत्रों में फीचर डेस्क का महत्व भी बढ़ गया है और उनकी उपयोगिता भी । समाचार पत्रों में अब फीचर के कारण बेहतर प्रस्तुतिकरण और तात्कालिकता पर अधिक दिया जाने लगा है। कई बडे अखबार समूहों में अब केंद्रीयकृत फीचर लेखन व्यवस्था भी शुरू हो गई है जिसके माध्यम से महत्वपूर्ण विषयों पर फीचर तैयार कर अखबार के सभी संस्करणों के लिए भेज दिये जाते हैं। इंटरनेट और सूचना तकनीक के चमत्कारों ने आज फीचर लेखन को आसान बना दिया है। लेकिन इन्हीं चमत्कारों के कारण आज फीचर लेखन में नई चुनौतियाँ खडी हो गई है।आज फीचर लेखक को इस चीज पर सर्वाधिक ध्यान देना पडता है कि, उसके फीचर में सारे तथ्य एकदम सही हों, ताजे हों, समीचीन हों और वे पाठक की सारी जिज्ञासाओं का समाधान भी कर सकें। फीचर की रचना और लेखन :-

फीचर, पत्रकारिता की एक ऐसी विधा है जिसमें लेखन को नियमों की किसी खास सीमा में नहीं बांधा जा सकता। विकसित देशों में पत्रकारिता की एक विधा के रूप में फीचर लेखन बहुत लोकप्रिय है। चूंकि भारत में पत्रकारिता का जन्म और विकास राजनीति के साथ हुआ है इसलिए यहाँ फीचर की विकास यात्रा अपेक्षाकृत देरी से शुरू हुई। यहाँ प्रारम्भिक पत्रकारिता में कलम का उपयोग तलवार के रूप में किया गया। आजादी के बाद के वर्षों में और विशेष रूप से आपातकाल के बाद के वर्षों में अखबारों ने राजनीति से इतर जीवन के वृहत्तर आयामों की खोज करने और जीवन को उसकी समग्रता में देखने समझने का काम तेज कर दिया था। इसी के चलते हमारे देश में फीचर लेखन की एक विशिष्ट शैली विकसित हुई। प्रिंटिग टैकनोलॉजी में आए क्रांतिकारी परिवर्तनोने ने फीचर लेखन की उपयोगिता, जरूरत और महत्व तीनों को द्विगुणित कर दिया है।फीचर रचना का मुख्य नियम यह है कि , फीचर आकर्षक तथ्यात्मक और मनोरंजक होना चाहिए । वर्तमान में फीचर के लिए किसी खास प्रकार का ले आऊट, साज सज्जा, आकार-प्रकार या शब्द सीमा का बंधन नहीं रह गया है। आज कम से कम शब्दों में फीचर रचना को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाने लगा है। इसी तरह अब एक विषय पर एक बडी रचना के जगह एक साथ छोटी-छोटी कई सूचनाओं-सामग्रियों को प्रस्तुत करके भी फीचर लिखे जाने लगे हैं।

मोटे तौर पर फीचर लेखन के लिए 5 मुख्य बातों का ध्यान रखा जाता है-

(१) तथ्यों का संग्रह :

जिस विषय या घटना पर फीचर लिखा जाना है उससे जुडे, तथ्यों को एकत्रित करना सबसे जरूरी काम है। तथ्यों और जानकारी को जुटाए बिना फीचर की रचना हो ही नहीं सकती। जितनी अधिक जानकारी होगी, फीचर उतना ही उपयोगी और रोचक बनेगा। तथ्यों के संग्रह में इस बात का भी खास ध्यान रखा जाना चाहिए कि तथ्य मूल स्रोत से जुटाएँ जाएं और वह एकदम सही हो। गलत तथ्यों से फीचर का प्रभाव ही उल्टा हो जाता है

(२) फीचर का उद्देश्य :

फीचर लेखन का दूसरा महत्वपूर्ण बिन्दु फीचर के उद्देश्य का निर्धारण है।किसी घटना या विषय पर लिखे जाने वाले फीचर का उद्देश्य निश्चित किए बिना फीचर लेखन स्पष्ट नहीं हो सकता।किसी दुर्घटना से जुडा फीचर लिखने के लिए यह तय करना जरूरी है किदुर्घटना के किसी पहलू पर फीचर लिखा जाना है, दुर्घटना के इतिहास पर दुर्घटना के प्रभावों पर, दुर्घटना की रोकथाम के तरीकों पर या दुर्घटना के यांत्रिक पक्ष पर । एक बार उद्देश्य तय हो जाए तो फीचर लेखन का चौथाई काम पूरा हो जाता है।

(३) प्रस्तुतिकरण :

फीचर लेखन का यह अंत्यन्त महत्वपूर्ण पक्ष है। फीचर लेखन में इस बात का खास ध्यान रखा जाना चाहिए कि फीचर मनोरंजक हो। उसे सरस और सुबोध ढंग से प्रस्तुत किया जाए। तथ्यों का प्रस्तुतिकरण सहज हो और तथ्यों की अधिकता से पठनीयता खत्म न हो।

Scanned with CamScanner

(४) शीर्षक का आमुख :

किसी अच्छे समाचार की तरह ही अच्छे फीचर का शीर्षक और आमुख भी उपयुक्त ढंग से लिखा जाना चाहिए। अच्छे शीर्षक से पाठक सहज रूप से फीचर की ओर आकर्षित हो सकता है। खराब शीर्षक के कारण यह भी हो सकता है कि , पाठक का ध्यान उसकी ओर जाए ही नहीं। इसी तरह अच्छा आमुख भी पाठक को बांध सकता है। बेतरतीब ढंग से लिखे आमुख के कारण पाठक में अरूची पैदा हो सकती है। शीर्षक की विशेषता यह होनी चाहिए कि वह पाठक को आकृष्ट भी कर ले, पाठक में विषय के प्रति जिज्ञासा भी पैदा करे और सार्थक भी हो। शीर्षक में शब्दों की तुकबंदी या शब्दों के ध्वन्यात्मक प्रभावों की अधिकता के प्रयोग से बचा जाना चाहिए।

(५) साज सज्जा :

लेखन तब तक पूरा नहीं होता जब तक उसकी पर्याप्त साज सज्जा की तैयारी पूरी न हो जाए। फीचर के साथ इस्तेमाल होने वाले चित्रों, रेखाचित्रों और ग्राफिक्स का चयन भी फीचर रचना का एक जरूरी पहलू है। छपाई की वर्तमान तकनीक के कारण फीचर की साज सज्जा अब बहुत ही आसान हो गई है और उसमें तरह-तरह के प्रयोग करने की संभावना भी बढ़ गई है।

फीचर लेखन एक कला भी है और अब जब एक फीचर का स्वरूप बदल रहा है तो फीचर लेखन की तकनीक और तरीके भी बदल रहें है। वर्तमान में फीचर अपनी परम्परागत शैलियों और परिभाषाओं की सीमा तोड कर नए-नए रूप बदलते जा रहे हैं।

संदर्भ सूची :-

1) https://brainly.in
2) https://hi.m.wikipedia.org
3) https://hihindi.com
4) https://sites.google.com
5) https://www.hindivibhag.in
6) व्यावसायिक क्षेत्रों मे हिन्दी का-प्रयोग, संपादक, डॉ.एस.पी. शर्मा
7) मीडिया - साहित्यिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में, डॉ. महादेव गाड़े

Scanned with CamScanner